

## प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित जीवन की अभिव्यक्ति

पूजा कुमारी

शोधार्थी

रामचन्द्र चन्द्रवंसी विश्वविद्यालय, नवडीहकला, बिश्रामपुर, पलामू, झारखंड

### प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के विकास में प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। विशेष रूप से ग्रामीण समाज, जाति-व्यवस्था, आर्थिक शोषण और सामाजिक विषमता उनके साहित्य के प्रमुख विषय रहे हैं।

भारतीय समाज में दलित वर्ग लंबे समय तक सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से शोषित रहा है। साहित्य में इस वर्ग की स्थिति को उजागर करना एक महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य रहा है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में दलित जीवन को केवल सहानुभूति के रूप में ही नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की आलोचना के रूप में भी प्रस्तुत किया है। हालाँकि उनके अधिकांश उपन्यासों में दलित पात्र मुख्य पात्र नहीं हैं, फिर भी गौण पात्रों के माध्यम से उन्होंने दलितों के जीवन की पीड़ा, संघर्ष और सामाजिक अपमान को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। भारतीय समाज की वर्ण-व्यवस्था ने सदियों तक दलित समुदाय को सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक अधिकारों से वंचित रखा। उन्हें अस्पृश्य माना गया, मंदिरों और सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश से रोका गया, तथा शिक्षा और सम्मानजनक जीवन से दूर रखा गया। आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रेमचंद पहले ऐसे लेखक हैं जिन्होंने इस व्यवस्था की आलोचना करते हुए दलित जीवन को साहित्यिक गरिमा प्रदान की। उनका साहित्य सामाजिक यथार्थवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज-परिवर्तन का माध्यम मानते थे। इसलिए उनके उपन्यासों में दलित पात्र करुणा के पात्र मात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील मनुष्य के रूप में उपस्थित होते हैं।

### प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ

प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व करता है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का व्यापक चित्रण मिलता है, जिसमें जातिगत भेदभाव और वर्गीय असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उदाहरण के लिए गोदान में किसानों, मजदूरों और निम्न वर्ग के लोगों के जीवन का अत्यंत यथार्थ चित्रण मिलता है। इस उपन्यास में समाज के निम्न वर्गों और दलित समुदाय की कठिन परिस्थितियों को दिखाया गया है। इसी प्रकार रंगभूमि और कर्मभूमि में भी सामाजिक अन्याय और जातिगत भेदभाव के प्रसंग मिलते हैं। इन रचनाओं में दलित पात्रों की उपस्थिति समाज की संरचना को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

### दलित जीवन की अभिव्यक्ति

‘दलित’ शब्द का अर्थ है दबाया गया, कुचला गया, शोषित। आधुनिक संदर्भ में यह शब्द उन समुदायों के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें परंपरागत जाति-व्यवस्था में निम्न स्थान दिया गया।

### दलित साहित्य का उद्देश्य है—

- सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना।
- दलित अनुभवों को अभिव्यक्ति देना।
- समानता और मानवाधिकार की स्थापना करना।
- जातिगत भेदभाव का प्रतिरोध करना।

यद्यपि प्रेमचंद स्वयं दलित समुदाय से नहीं थे, फिर भी उन्होंने दलित जीवन की समस्याओं को गंभीरता और संवेदना के साथ चित्रित किया।

### (क) सामाजिक बहिष्कार

प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित पात्रों को समाज में निम्नतम स्थान प्राप्त है। उन्हें मंदिर, कुएँ और सामाजिक आयोजनों से दूर रखा जाता है। कर्मभूमि में निम्न वर्ग के लोगों के साथ होने वाला भेदभाव समाज की कठोर मानसिकता को उजागर करता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र सूरदास भले ही दलित न हो, लेकिन वह समाज के वंचित और शोषित वर्ग का प्रतिनिधि है।

### (ख) आर्थिक शोषण

दलित वर्ग प्रायः खेतिहर मजदूर या सेवा कार्य करने वाला वर्ग होता है। उन्हें मेहनत के बावजूद उचित मजदूरी नहीं मिलती। गोदान में किसान और मजदूर वर्ग की स्थिति का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने यह दिखाया है कि निम्न वर्ग के लोग आर्थिक शोषण का शिकार होते हैं। इस उपन्यास में होरी, धनिया, गोबर आदि पात्र किसानों की कठिन परिस्थितियों को दर्शाते हैं। इनके माध्यम से समाज के निम्न वर्गों की पीड़ा स्पष्ट होती है।

### (ग) मानवीय संवेदनाएँ

प्रेमचंद ने दलित पात्रों को केवल पीड़ित के रूप में नहीं दिखाया, बल्कि उनके भीतर की मानवीय संवेदनाओं और आत्मसम्मान को भी चित्रित किया है। कर्मभूमि में सामाजिक समानता और मानवता का संदेश मिलता है। इस उपन्यास में समाज सुधार और समानता की भावना के माध्यम से दलितों के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है।

### (घ) सामाजिक परिवर्तन की चेतना

प्रेमचंद के साहित्य का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज में परिवर्तन की चेतना उत्पन्न करना है। उनके उपन्यासों में शिक्षा, समानता और सामाजिक सुधार के विचार बार-बार सामने आते हैं। सेवासदन में भी समाज सुधार की भावना दिखाई देती है। यद्यपि यह उपन्यास मुख्य रूप से नारी जीवन पर केंद्रित है, फिर भी इसमें समाज की असमानताओं का चित्रण मिलता है।

## प्रमुख उपन्यासों में दलित जीवन की अभिव्यक्ति

### (क) रंगभूमि

रंगभूमि प्रेमचंद का अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक उपन्यास है। इसका केंद्रीय पात्र सूरदास एक अंधा, गरीब और सामाजिक रूप से उपेक्षित व्यक्ति है। वह औद्योगिक पूँजीवाद, सामंती शक्तियों और औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करता है।

### दलित संदर्भ

- भूमि से बेदखली का प्रश्न
- सामाजिक उपेक्षा
- शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध
- नैतिक शक्ति और मानवीय गरिमा

### (ख) कर्मभूमि

कर्मभूमि में अस्पृश्यता और मंदिर-प्रवेश का प्रश्न प्रमुख रूप से उठाया गया है। उपन्यास में तथाकथित अछूतों के सामाजिक बहिष्कार तथा उनके अधिकारों के लिए चलने वाले आंदोलनों का चित्रण मिलता है।

## प्रमुख बिंदु

- मंदिर प्रवेश आंदोलन
- सामाजिक समानता की मांग
- जातिगत भेदभाव का विरोध
- राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक सुधार का संबंध

## (ग) गोदान

गोदान भारतीय ग्रामीण जीवन का महाकाव्य माना जाता है। इसमें किसान जीवन के साथ-साथ निम्नवर्गीय और दलित समुदाय की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का भी प्रभावशाली चित्रण है।

## दलित जीवन की अभिव्यक्ति

- जातिगत विभाजन
- श्रम का शोषण
- गरीबी और असमानता
- सामाजिक सम्मान का अभाव

## (घ) प्रतिज्ञा

प्रतिज्ञा में सामाजिक सुधार और रूढ़ियों के विरोध का स्वर मिलता है। यद्यपि इसका केंद्र विधवा-विवाह है, परंतु व्यापक स्तर पर यह सामाजिक समानता और मानवीय मूल्य की स्थापना का समर्थन करता है।

## गौण पात्रों के माध्यम से दलित जीवन

प्रेमचंद के उपन्यासों में कई ऐसे पात्र मिलते हैं जो मुख्य कथा में गौण होते हुए भी सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के रूप में

- गोदान – ग्रामीण मजदूर और निम्न वर्ग के पात्र
- रंगभूमि – समाज के वंचित और निम्न वर्ग के पात्र
- कर्मभूमी – समाज सुधार और समानता के समर्थक पात्र

इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद यह दिखाते हैं कि समाज में दलित और निम्न वर्ग के लोग किस प्रकार से संघर्षपूर्ण जीवन जीते हैं।

## प्रेमचंद की दृष्टि

प्रेमचंद की दृष्टि मानवीय और लोकतांत्रिक है। वे समाज में समानता और न्याय की स्थापना के पक्षधर थे। उनके साहित्य में दलित जीवन का चित्रण केवल करुणा उत्पन्न करने के लिए नहीं है, बल्कि समाज की अन्यायपूर्ण व्यवस्था की आलोचना के लिए भी है। प्रेमचंद मानते थे कि जब तक समाज में जातिगत भेदभाव समाप्त नहीं होगा, तब तक वास्तविक सामाजिक प्रगति संभव नहीं है। महात्मा गांधी के अस्पृश्यता-निवारण आंदोलन, राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक सुधार की विचारधारा का प्रभाव प्रेमचंद पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे मानते थे कि किसी भी सभ्य समाज का मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि वह अपने सबसे वंचित लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

### उनके साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ –

- यथार्थवाद
- मानवीय करुणा
- सामाजिक न्याय
- वर्ग एवं जाति-विरोध
- नैतिक चेतना

### निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित जीवन की अभिव्यक्ति मुख्यतः गौण पात्रों के माध्यम से हुई है। इन पात्रों के द्वारा उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत असमानता, आर्थिक शोषण और सामाजिक उपेक्षा को उजागर किया है। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज के यथार्थ का दर्पण है। उनके उपन्यासों में दलित जीवन का चित्रण सामाजिक न्याय और समानता की भावना को मजबूत करता है। इस दृष्टि से प्रेमचंद का साहित्य हिंदी साहित्य में सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है।

### संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद—गोदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 85–120
2. प्रेमचंद—रंगभूमी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 140–175
3. प्रेमचंद—कर्मभूमी राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, पृ. 95–130
4. प्रेमचंद—सेवासदन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 60–85
5. नामवर सिंह—इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 210–225
6. रामविलास शर्मा—प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 150–180
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास , नेशनल पब्लिकेशन हॉउस पृ. 420–455।